पावागढ़

सिद्धक्षेत्र पावागढ़ जी, चम्पानेर के पास समुद्र तल से 925 फिट की ऊँचाई पर स्थित है। श्वेत पाषाण की भगवान पार्श्वनाथ की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है।

इतिहासिकता :- यह धार्मिक स्थल, आयोध्या के राजा, श्री रामचन्द्र जी के समय से स्थित है। एक ग्रीक भूगोलिक टेलिमी जिन्होने हिन्दुस्तान की यात्रा 140 ई. में की थी उन्होने इस पूज्य स्थल को, प्राचीन पवित्र स्थान माना है। सम्वत 1540 विक्रमी में मोहम्मद बेगड़ो, जो कि मुस्लिम सुल्तान था उसने इस मन्दिर को ध्वस्त कर दिया था।

उसके बाद माघ सुदी त्रयोदशी 1937 में कनाकाकृतिजी महाराज के सान्निध्य में इसका पुनः निर्माण किया गया। उस समय इस मन्दिर को शत्रुंजय मन्दिर के समान पवित्र माना जाता था। प्रतिवर्ष माघसुदी त्रयोदशी पर यहाँ विशाल मेला लगता है। और मन्दिर मे ध्वज फहराया जाता है।

भगवान रामचन्द्र जी के सुपुत्र लव और कुश ने यहाँ तपस्या करके निर्वाण प्राप्त किया और अनेकों साधु-सन्तों ने भी यहाँ तप कर निर्वाण की जाना जाता है।किया है यह सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित है।

अन्य मन्दिर :- वर्तमान में इस पर्वत पर सात जैन दिगम्बर मन्दिर स्थित हैं और नीचे दो जैन दिगम्बर मन्दिर स्थित हैं।

पुरातत्व की दृष्टि से अदभुत शिल्पकला के दिग्दश्रन यहां होते है।

क्षेत्र स्थिति :- पावागढ़ रेलवे स्टेशन बडोदरा-रतलाम रेलवे लाईन पर स्थिति है। इस मन्दिर की चढ़ाई यात्रीगण पैदल चलकर करते है यह चढ़ाई लगभग 5 किमी लम्बी है। चढ़ाई का निचला हिस्सा पावागढ़ स्टेशन और चम्पानेर टाउन के नाम से जाना जाता है।

यहाँ यात्रियों की सुविधा के लिए दिगम्बर धर्मशाला और भोजनालय है।

सम्पर्क सूत्र :- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कोठी, पावागढ़ 389360, जिला पंचमहल-गुजरात